ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

अतीत के झरोखों में ऐतिहासिक टिहरीशहर

डॉ0 दयाधर सेमवाल

सहायक प्राध्यापक, इतिहास विभाग राजकीय स्नातकोत्तर महाविध्यालय, अगस्त्यमूनी रूद्रप्रयाग

गढ़वाल रियासत में 'बनगढ़' परगने की 'बनगढ़ पट्टी' में स्थित टिहरी एक कस्बा था जो टिहरी गढ़वाल–नरेशों की राजधानी थी। यह शहर 30^0–22′– 54′′ उत्तरी अक्षांश तथा 78^0–31′–18′′ देशान्तर पर समुद्रतट से 2100 फीट की ऊँचाई पर भागीरथी के बायें किनारे और भिलंगना के दाहिने किनारे अर्थात दोनों नदियों के घिराव के मध्य बसा हुआ था।

पौराणिक काल में यह शहर ''गणेश प्रयाग'' के नाम से जाना जाता था। ''गणेश प्रयाग'' रूप में इस स्थल का उल्लेख स्कन्दपुराण के उप–पुराण केदारखण्ड में इस प्रकार हुआ है कि, यहाँ गणेश जी ने शिव की पूजा की थी। इस स्थान पर भिलंगना से उत्पन्न धारा गंगा के अंग में प्रवाहित हुई है। वहाँ गंगा के संगम में वह तीर्थ माना जाता है। इस स्थान के वामभाग में धनुशतीर्थ तथा दक्षिण भाग में शेशतीर्थ है। इनके सेवन से सौ यज्ञों व उसमें स्नान से मनुश्य रोगरहित विश्णुलोक को जाता है।

टिहरी शहर का इतिहास बहुत पुराना नहीं है। अठारहवीं शताब्दी तक गढ़वाल राजाओं की राजधानी चाँदपुर, देवलगढ़ व श्रीनगर में थी। उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में गोरखों ने गढ़वाल पर आक्रमण किया, गोरखों के साथ युद्ध में तत्कालीन गढ़वाल नरे ा प्रद्युम्न शाह वीरगति को प्राप्त हो गये थे तथा सम्पूर्ण गढ़वाल गोरखों के अधीन हो चुका था। इसके प चात, महाराजा प्रद्युम्न शाह के निर्वासित पुत्र युवराज सुदर्शन शाह ने अंग्रेजों से सहायता मांगी और 12 वर्श प्श्चात् अंग्रेजों की सहायता लेकर गोरखों से गढ़वाल को मुक्त करवाया। परन्तु सुदर्शन भााह को इसकी बड़ी भारी कीमत चुकानी पड़ी व गढ़वाल का 59 प्रतिशत भाग (वर्तमान चमोली, पौड़ी, देहरादून, जखोली तहसील को छोड़कर वर्तमान रूद्रप्रयाग) अंग्रेजों को देना पड़ा व सुदर्शन शाह के पास केवल टिहरी गढ़वाल (वर्तमान टिहरी व उत्तरकाशी) ही शेश रहा। जब गढ़वाल राजाओं की राजधानी श्रीनगर (पौड़ी) अंग्रेजों के अधिकार में आ गयी तो महाराजा सुदर्शन भााह को अपने लिये एक नवीन राजधानी की आवश्यकता हुई। राजा ने इसके लिए अनेक स्थानों का भ्रमण किया तत्पश्चात् राजा वर्तमान अठूर, (टिहरी गढ़वाल) पहुँचा, उक्त क्षेत्र श्रीनगर की तरह लम्बा, चौड़ व समतल वभागीरथी, गंगा के पश्चिमी तट पर स्थित था। राजा सुदर्शन शाह शुभ मुहर्त में श्रीनगर से अपने सेवकों के साथ अठूर के लिए निकले, और 'गणेश प्रयाग' (टिहरी) तक पहुँचे, वहाँ राजा ने सत्ये वर शिवलिंग को प्रणाम करके जैसे ही आगे वट वृक्ष के समीप गये तो राजा का घोड़ा वहाँ से आगे ही नहीं बढ़ा, फिर उस रात राजा को वहीं रूकना पड़ा। रात सपने में उनकी ईश्ट देवी राजराजेश्वरी ने उसे निर्देश दिया कि वह अठूर के बजाय यहीं अपनी राजधानी स्थापित करे। उस समय तक वह स्थल उजाड़ छोटे गाँव के रूप में था तथा 'तिहरी'' नाम से जाना जाता था। पौराणिक

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

मान्यतानुसार भागीरथी भिलंगना के संगम पर पाताल गंगा के रूप में एक अन्य धारा यहाँ मिलती थी, इसीलिये यह स्थान तिहरी कहलाता था। इस गाँव में धुनारों के कुछ परिवार रहते थे जो बाबल के मोटे रस्से बनाकर उनसे भिलंगना एवं भागीरथी पर सांगों (झूला पुल) बनाकर उससे लोगों को एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में उतारते थे। फिर राजा ने देवी राजराजे वरी के निर्देशानुसार टिहरी राजधानी बनाने का निश्चिय किया और शुभ मुहूर्त 28 दिसम्बर, 1815 ई0 को 11 बजे दिन कुम्भ लग्न में महाराजा सुदर्शन शाह ने इस स्थान का नाम टिहरी रखकर अपनी राजधानी की स्थापना की। इस स्थान का नाम टिहरी रखने के बारे में प्रचलित मान्यता है कि यहाँ पर नदी टेड़ी होकर बहती है अतः इसका भाुद्ध गढ़वाली नाम टीरी इसी आधार पर पड़ा होगा। नगर का क्रमिक और प्रमाणित इतिहास भी इसी तिथि से प्रारम्भ होता है। इस नगर की स्थापना के पश्चात् महाराजा सुदर्शन शाह ने 700 रू0 में 30 छोटे–छोटे घर बनवाये जिनमें किरायादार रह सके, इनमें प्रत्येक का किराया सालाना तीन रूपया निश्चित किया गया। यह इस शहर की निर्माण की शुरूआत थी, फिर महाराजा द्वारा यहाँ राज–दरवार की स्थापना की गयी तथा भागीरथी व भिलंगना के बीच में बाजार स्थापित करवाया। 1819 ई0 में यहाँ एकमात्र उल्लेखनीय भवन राजमहल ही था जिसे छोड़कर राजा एक अन्य नवनिर्मित भवन में चला गया था। महाराजा सुदर्शन शाह ने 1856 ई0 तक शासन किया, इसके पश्चात् उनका पुत्र महाराजा भवानी शाह (1856–1871 ई0) राजा बना। भवानी शाह के पश्चात् उनके पुत्र महाराजा प्रताप शाह (1871–1886 ई0) राजा हुये। महाराजा प्रताप शाह शिल्पकला के बड़े प्रेमी थे, उन्होंने 1877 ई0 में प्रतापनगर नामक शहर बसाया तथा नगर में अनेक भव्य भवनों का निर्माण करवाया। उनके द्वारा निर्मित प्रताप इंटर कॉलेज व मोतीबाग में स्थित जिला सत्र न्यायालय की इमारत अभी भी उनके शिल्पकला प्रेम की उत्कृश्ट मिशाल है। राज्य की ओर से राज्य में पहला आधारित विद्यालय संवत् 1940 (1883 ई0) में प्रताप शाह द्वारा ही टिहरी में स्थापित किया गया जिसमें ऋशिकेश हरिद्वार व काशी तक के विद्यार्थी विद्यार्जन के लिए पहुँचते थे। 1883 ई0 में ही टिहरी रियासत में पहला डाकघर टिहरी में खोला गया तथा राज्य में डाक पहुँचाने के लिए डाक वाहकों की नियुक्ति की गयी। स्वास्थ्य सुविधाओं को मध्यनजर रखते हुये महाराजा प्रताप शाह द्वारा 1876 ई0 में राजधानी में पहला ''खैराती दवा–खाना'' स्थापित किया इसमें भारतीय व यूरोपीयन पद्धति के दो चिकित्सक नियुक्त थे। इसके अतिरिक्त महाराजा द्वारा मसूरी–श्रीनगर मार्ग की मरम्मत, जाखणी (वर्तमान कीर्तिनगर) में गंगा जी पर सरकार द्वारा बनाये गए सांगा (पुल) का आधा व्यय चुकाया, धनोल्टी, पौखाल, कौड़िया व डांगचौरा में डाकबंगले बनवाए। महाराजा प्रताप ाह की मृत्यु के प चात् उनका पुत्र महाराजा कीर्तिशाह (1886–1913 ई0) राजा हुये। महाराजा प्रताप ाह की मृत्यु के समय कीर्तिशाह केवल तेरह वर्श के थे। अल्पावस्था के कारण कुछ समय तक शासन राजमाता महारानी गुलेरी ने देखा। बड़े होने पर महाराजा कीर्तिशाह ने राजदरवार का निर्माण करवाया जिसे ''कैसल'' नाम दिया गया। 1897 ई0 में महाराजा कीर्तिशाह ने महारानी विक्टोरिया की डायमण्ड जुबली की याद में नगर की ऊँची भूमि चनाखेत में ऐतिहासिक घंटाघर का निर्माण करवाया। महाराजा द्वारा राज्य में नये ढंग के विद्यालयों की स्थापना की गयी व प्रताप पाठशाला (जिसकी स्थापना महाराजा प्रताप शाह द्वारा की गयी थी) को उच्चीकृत कर हाईस्कूल बनाया, टिहरी में कैम्बिल बोर्डिंग हाउस, दिवेर

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

संस्कृत पाठ ाला, मुहदमन मदरसा व कन्या पाठशाला की स्थापना की गई। भारत में जब केवल दो–चार महानगरों तक ही विद्युत प्रकाश सम्भव हो पाया था तब 1903 ई0 में महाराजा द्वारा टिहरी नगर में कुशल तकनीकी से जल विद्युत प्रकाश उत्पन्न कर इस पर्वतीय क्षेत्र को प्रकाशित किया गया। महाराजा द्वारा टिहरी में धर्मार्थ औशधालय व सैनिक अस्पताल खोले गये तथा चेचक व हैजा जैसी महामारियों से बचने के लिए टीके लगाने वाले बेक्सीनेटर नियुक्त किये गये। महाराजा ने अपने नाम पर कीर्तिनगर नामक भाहर बसाया पुलों व मार्गों के निर्माण के लिए महाराजा द्वारा ''गढ़वाली सैपर्स'' नाम से एक पल्टन बनाई गई। प्रथम विश्व युद्ध में इस पल्टन को अंग्रेजों की सहायता के लिए भेजा गया था। संचार सेवाओं में वृद्धि करने के लिए टिहरी में डाकघर के साथ टेलीग्राफ ऑफिस खोला गया तथा सरकारी डाकों को कार्यालय तक पहुँचाने के लिए नजारत नियुक्त किये गये। महाराजा कीर्तिशाह के समय में टिहरी में म्युनिसिप्यूलिटी'' कमेटी स्थापित की जा चुकी थी।

महाराजा कीर्तिशाह के पश्चात् उनका पुत्र महाराजा नरेन्द्र शाह (1913–1946 ई0) राजा बना। ज्योतिशियों ने अनिश्ट की आशंका व्यक्त की कि राजा का टिहरी में रहना उनके हित में नहीं है। इस अनिश्ट से मुक्ति के लिए महाराजा ने नरेन्द्रनगर नामक नगर को बसाया। इस नगर का निर्माण महाराजा द्वारा 1921 ई0 में प्रारम्भ करवाया तथा 10 वर्शों में यह नगर पूर्णतः स्थापित हुआ और 1924 ई0 में यहाँ राजप्रासाद का निर्माण कार्य पूर्ण हुआ इसके अतिरिक्त अनेक स्कूलों की स्थापना टिहरी में की गयी तथा सार्वजनिक पुस्तकालय तथा प्रताप हाईस्कूल को उच्चीकृत करके इन्टर कॉलेज बनाया व विद्या अध्ययन के लिए गढ़वाल से बाहर जाने वाले विद्यार्थियों के लिए महाराजा द्वारा आर्थिक सहायता प्रदान की गयी। महाराजा नरेन्द्र शाह के समय सड़कों की स्थिति में सुधार हुआ, 1921 ई0 में ऋशिकेश से नरेन्द्रनगर तक एवं 1937–38 ई0 में ऋशिकेश से देवप्रयाग तक तथा बाद में कीर्तिनगर तक मोटर मार्ग का निर्माण किया गया। नरेन्द्रशाह से पूर्व के राजाओं ने रियासत में जो चिकित्सालय खोले थे महाराजा द्वारा उन चिकित्सालयों में नये यन्त्र लगवाए और 1925 ई0 में नरेन्द्रनगर में एक नये चिकित्सालय 'होलि हौसपिटल'' की स्थापना करवायी।

महाराजा नरेन्द्रशाह के पश्चात् महाराजा मानवेन्द्र शाह राजा हुये, 1947 ई0 में देश स्वतंत्र होने के पश्चात् फरवरी, 1948 ई0 से 31 जुलाई, 1949 ई0 तक टिहरी गढ़वाल रियासत की जिम्मेदारी प्रजामण्डल की सरकार के हाथों में रही। अन्ततः 1 अगस्त, 1949 ई0 को टिहरी रियासत भारतीय गणतंत्र में विलीन हुई और टिहरी रियासत को जिले का स्वरूप प्रदान किया गया। 1963 ई0 में टिहरी में भागीरथी एवं भिलंगना पर बांध बनाने के लिए सर्वेक्षण हुआ। सन् 1971 ई0 में तत्कालीन केन्द्रीय सिंचाई मंत्री डॉ0 के0एल0राव ने टिहरी बांध बनाने की घोशणा व 1974 ई0 में स्थानीय लोगों की सहमति से बांध का निर्माण कार्य आरम्भ हुआ तथा इस ऐतिहासिक शहर को 10 किलोमीटर ऊपर पहाड़ी पर बसाने का निर्णय लिया गया। अन्ततः 2005 ई0 में यह ऐतिहासिक शहर पूर्णतः झील में समा गया।

कभी राजाओं की राजधानी रह चुका यह शहर आम के बगीचों से शोभायमान यह शहर अब इतिहास की यादों को अपने दामन में छुपाए हुए है। भवन, मठ, मन्दिर, स्मारक, स्तम्भ, बाग, बगीचे तथा स्थल सभी इतिहास के गर्त में समा चुके हैं।

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

संदर्भ ग्रंथ

i. स्कन्दपुराण, केदारखण्ड, 1994, अध्याय–176,184,188, प्रभात मिश्र शास्त्री हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग 12, इलाहाबाद।

ii. एटकिंशन, ई0टी0, 1998, ''हिमालयन गजेटियर'' अनुवादक प्रकाश थपलियाल बसंत कुसुमाकर, उत्तराखण्ड प्रकाशन, हिमालय संचेतन संस्थान आदिबद्री, चमोली।

iii. रतूड़ी, हरिकृश्ण, 1995, ''गढ़वाल का इतिहास'' भागीरथी प्रकाशन सुमन चौक,

iv. डबराल, शिव प्रसाद, जन्माश्टमी 2032, ''गढ़वाल का इतिहास'' बीरगाथा प्रकाशन, दुगड्डा कोटद्वार।

v. गणेशेन पुरा यत्र पूजितो वृशभध्वजः। भिल्लाङ्गणोद्भवा यत्र धारा गंगासम्भवा। गंगायास्सगंमें देव यत्र तीर्थ तु तत्स्मृतम। (स्कन्दपुराण, केदारखण्ड, 1994, अध्याय–147, भलोक 1–2।)

vi. गैरोला, महावीर प्रसाद, 1991, ''नई टिहरी और पर्यटन'', साप्ताहिक गढ़वाल मण्डल का गढ़वाल यात्रा पर्यटन विशेशांक, हिमवन्त प्रेस, कण्डोलिया मार्ग, पौड़ी गढ़वाल।

vii. पुरोहित, प्रकाश, 1991, ''जिन्दा रहेंगी यात्राएं'', प्रकाशक नन्दा देवी महिला लोक विकास समिति मन्दिर मार्ग, गोपे वर।

viii. विजल्वाण, जे0पी0, 2007, ''टिहरी उत्तरकाशी जनपद का सांस्कृतिक और राजनीतिक इतिहास'', जनानन्द प्रकाशन, उत्तरकाशी।

ix. 'इम्पीरियल गजट ऑफ इण्डिया'', वाल्यूम 12, पृश्ठ – 171, गवरमेंट प्रेस

x. मेहरा, सुरेन्द्र सिंह, 2001, ''मध्य हिमालय की रियासतों में भासन प्रबन्ध और समाज,'' तक्षशिला प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली।

xi. पाठक, शेखर, 1987, ''उत्तराखण्ड में कुली बेगार प्रथा,'' राधाकृश्ण प्रकाशन, प्राइवेट लिमिटेड 2/38 अंसारी रोड़, दरियागंज, नई दिल्ली।